



शान्ति रविवार 2020 आराधना हेतु मार्गदर्शिका

एमडब्ल्यूसी के पीस कमीशन
द्वारा 20 सितम्बर 2020 के
लिए तैयार मार्गदर्शिका

1

मूल
विषय
और
शास्त्रपाठ

अ. मूल विषय

यदि एक अंग दुख पाता है,
तो सब अंग उसके साथ दुख
पाते हैं: संगति और एकजुटता
के रूप में शान्ति

ब. इस मूल विषय को क्यों चुना गया:

यदि हम इस संसार में परमेश्वर की शान्ति और न्याय
को साकार करना चाहते हैं, तो यदि किसी एक व्यक्ति
को पीड़ा होती है, तो शेष सभी को इस पीड़ा का असर
सहानुभूतिपूर्वक अनुभव करना आवश्यक है।

स. बाइबल पाठ:

1 कुरिन्थियों 12:12-27
रूत 1:1-17
इफिसियों 4:1-6
गलातियों 6:1-5

2

प्रार्थना
निवेदन

- कोविड-19 से पीड़ित प्रत्येक व्यक्ति के लिए हम प्रार्थना करें। उन सभी के लिए प्रार्थना करें, जिन के प्रियजनों की इस बीमारी से मृत्यु हो गई; जो अभी बीमार हैं; जिन्होंने इस विश्वव्यापी महामारी से उत्पन्न आर्थिक संकट के कारण अपनी जीविका गवां दिया है; हम अपने लिए प्रार्थना करें जबकि हमारा जीवन और हमारे लिए "सामान्य" मानी जानी वाली बातें अब बदल चुकी हैं।
- योजनाबद्ध तरीके से थोपे जा रहे नस्लवाद को लेकर हम दुख प्रगट करें जिसके कारण प्रतिदिन अश्वेत लोगों को जान से मारा जा रहा है और उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है। हम विरोध प्रदर्शन करने वालों और कानून लागू करने वालों, दोनों के द्वारा उठाए जाने वाले हिंसक कदमों से शोकित हैं। हम यह अंगीकार करते हैं कि अनेक बार हमारे व्यवहारों और प्रतिक्रियाओं में भी निष्पक्षता और न्याय की कमी पाई जाती है। हम यह मानते हैं कि लम्बे समय से सारे महाद्वीपों में नस्लवाद की जड़ें गहराई से जमी हुई हैं और इनकी आपसी मिलीभगत से गुलामों के बाजार को बढ़ावा दिया जा रहा है। *सृष्टिकर्ता परमेश्वर, हमारे हृदयों और हमारे व्याकुल संसार की ओर हाथ बढ़ा ताकि लोग मन फिराएं और सही सम्बन्धों की स्थापना हो सके!*
- हाँगाँग के हमारे भाई बहनों के लिए प्रार्थना करें जबकि वे अपने मुख्य देश चीन के मामले को लेकर भारी उथलपुथल और टकराव का सामना कर रहे हैं।



परोइसे मिशनेरी शालोम, डीआर कांगो

- सुसमाचार प्रचार के प्रति अफ्रीका के हमारे भाइयों और बहनों के उत्साह और विश्वासयोग्यता के लिए परमेश्वर की स्तुति हो। आर्थिक चुनौतियों के साथ साथ, खराब मौसम और मलेरिया जैसी बीमारियाँ कोविड -19 के खतरे को बढ़ाते जा रहे हैं, तौभी हमारे ये भाई बहन परमेश्वर की आराधना में लगे हुए हैं और उनके पास जो कुछ भी है, उसी के द्वारा, अपने पड़ोसियों की सेवा कर रहे हैं, और वचन और कर्म से सुसमाचार फैला रहे हैं।

3

गीत

रिकार्डिंग सुनने के लिए एमडब्ल्यूसी के वेबसाइट पर जाएँ mwc-cmm.org/peacesunday

- "इसुनो कोकोरो उकिनि" / "पीस इन माय हार्ट" मितसुकु इशिदो, जापान/पृष्ठ 9 देखें।
- "यू आर नॉअ अलोन" ब्रायन मोयर सुडरमैन, कनाडा।
- "डूह पंगेरन" / "प्रिंस ऑफ पीस" ससोजोदि सर्दजोनि

4

अतिरिक्त
संसाधन

mwc-cmm.org/peacesunday

अ. अतिरिक्त संसाधन

- आराधना की पुकार और आशीषवचन के लिए विधियाँ
- शिक्षा के लिए सहायक संसाधन
- गवाहियाँ

ब. ऑनलाइन उपलब्ध:

- तस्वीरें (इस मार्गदर्शिका में दी गई तस्वीरों समेत)
- गीतों की रिकार्डिंग
- मेनोनाइट वर्ल्ड कॉफ्रिस द्वारा आदिवासियों के साथ एकजुटता की घोषणा



5 गतिविधियाँ

अलग अलग टुकड़ों को जोड़ कर कम्बल या चादर बनाएं
अलग अलग छोटे छोटे टुकड़ों को सिल कर, हुक लगाकर, बुन कर, या क्रोएशिया से कढ़ाई कर एक चादर या कम्बल तैयार करें। इस प्रकार का कार्य यह दर्शाता है कि हम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, और संगति और एकजुटता के माध्यम से एक साथ आना किस प्रकार की सुन्दरता को प्रगट करता है। (अमस्टरडम के पास जून 2019 में आयोजित ग्लोबल मेनोनाइट पीसबिल्डिंग कॉन्फ्रेंस एण्ड फेस्टिवल के प्रतिभागियों ने इस आयोजन के दौरान एक सुन्दर कम्बल तैयार किया था। पढ़ें “ए कम्फर्टिंग स्टोरी।”)

सम्पर्क के लिए पता:

एन्ड्रू सुडरमान

एमडब्ल्यूसी पीस कमीशन सचिव

AndrewSuderman@mwc-cmm.org

mwc-cmm.org/peace-commission

आप इन संसाधनों का उपयोग करते हुए शान्ति को किस प्रकार से व्यवहार में लागू करेंगे?

अपनी गवाहियाँ, रिपोर्ट, तस्वीरें, विडियो, या चित्रकला इस इमेल पते पर भेजें:
photos@mwc-cmm.org

पिछले वर्ष शान्ति रविवार के अवसर पर, आराधना मार्गदर्शिका के अनुसार
हाँडरस, भारत, और जर्मनी की मण्डलियों ने शान्ति का वृक्ष तैयार किया

विक्रम राव



अरुण घोष और मारशेट नेववासन



मार्कल वेस

अशीष बिलार



बारबारा हेरो-गाले



प्रस्तावना

हमारी एकजुटता और एक दूसरे के साथ जुड़ा रहना

– एन्ड्रू सुडरमान

वर्तमान समय में, हमारा संसार अनेक संघर्षों में उलझा हुआ है। पहले, हमें एक विश्वव्यापी महामारी ने जकड़ लिया जिसके कारण हमारे जीवन में अब कुछ भी सामान्य नहीं रहा। हमारा दूसरा संघर्ष गहरी जड़ जमाए हुए नस्लवाद की खुल्लमखुल्ला अभिव्यक्ति से है जिसके कारण लगातार हमारे अश्वेत भाई बहन मारे जा रहे हैं और अत्याचार झेल रहे हैं। विश्वव्यापी महामारी और सुनियोजित नस्लवाद – दोनों ही अपने आप तक सीमित संघर्ष नहीं हैं। दोनों ही एक ऐसी असमानता को सामने लाते हैं (नस्लीय और आर्थिक) जिसके कारण लगातार दुख और पीड़ा उत्पन्न होती जा रही है।



“शान्ति को समझने के लिए और छुटकारा प्राप्त करने के लिए यीशु को अपने हृदय में रखना आवश्यक है।” बीआईसीसी जेनेजा, हारे, जिब्बाब्वे।

फोटो: डुडुजिले मोयो।

ये संघर्ष इस बोध को सामने लाते हैं कि परमेश्वर के शान्ति का राज्य अब तक इस पृथ्वी पर साकार नहीं हुआ है। किन्तु, यदि, हम उन लोगों की पुकार की ओर ध्यान लगाएँ जो साँस नहीं ले पा रहे हैं – कोविड -19 के कारण या पुलिस की बर्बरता के कारण – हम उन लोगों के साथ एकजुटता दिखाना सीख सकते हैं जो पीड़ा में हैं और/या अत्याचार झेल रहे हैं।

बाइबल में एक ऐसे परमेश्वर के बारे में बताया गया है जो हताश, मूलभूत अधिकारों से वंचित, और पीड़ित लोगों के साथ साथ चलता है। बाइबल में, परमेश्वर पर विश्वास करने वालों और उसके पुत्र यीशु मसीह के पीछे चलने वालों के लिए भी बुलाहट दी गई है कि वे यह जानें कि किस प्रकार से सारी मानवजाति एक दूसरे से जुड़ी हुई है। यदि कोई एक व्यक्ति दुख पाता है, तो

इसका अर्थ है कि सृष्टि में सब कुछ ठीक नहीं है; सब कुछ वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए। यदि हम परमेश्वर की शान्ति और न्याय को इस संसार में साकार करने का बोझ रखते हैं, तो एक व्यक्ति को भी यदि कुछ होता है, तो यह सब लोगों के लिए चिन्ता की बात होनी चाहिए। यदि हम शान्ति की एक कलीसिया बनना चाहते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना आवश्यक है कि हम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, हमें अन्याय को चुनौती देना है, और दुख सह रहे लोगों के साथ खड़ा होना है।

किन्तु, यह स्वीकार करने का अर्थ कि हम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, यह है कि हमें “व्यक्तिगत” के भ्रम को तोड़ना है। “व्यक्तिगत” की धारणा यह कहती है कि एक व्यक्ति दूसरों से “स्वतंत्र” या “अलग” है। यह धारणा यह मान लेती है कि एक व्यक्ति दूसरों पर “निर्भर रहे बिना” रह सकता है; और इस धारणा को अस्वीकार करती है कि एक व्यक्ति की क्रियाओं को दूसरे लोग निर्धारित या प्रभावित करते हैं। इसलिए जब हम “व्यक्तिगतवाद” पर जोर देते हैं, तो एक ऐसा संघर्ष आरम्भ हो जाता है जो दूसरे से स्वतंत्र हो जाने का प्रयास करता है।

किन्तु, पिछले कुछ महीनों में कोविड-19 के कारण जो बात सामने आई है, वह यह है, हम किस प्रकार से एक दूसरे से स्वतः ही जुड़े या बन्धे हुए हैं। और यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसे अत्याचार सह रहे और शोषित लोग हमें पहले ही बता चुके होते। सीधी सी बात है, हम जो कुछ करते हैं, वह दूसरों को प्रभावित करता है। और दूसरे जो कुछ करते हैं, वह हमें प्रभावित करता है। चाहे भली बात हो, या बुरी, सब बातों में हम एक दूसरे से स्वतः ही जुड़े हुए हैं। यदि हम इस बात की ओर ध्यान दें कि कोविड -19 किस प्रकार से फैल रहा है, तो यह सच्चाई अपने आप हमारी समझ में आ जाएगी।

दक्षिण अफ्रीका में, उबुन्दु की धारणा एक गहरी और अर्थपूर्ण बात स्मरण दिलाती है। उबुन्दु एक वाक्यांश – उमुन्दु नगुमुन्दु नगाबन्दु – के संक्षिप्त रूप के रूप में प्रयोग में लाया जाता है, जिसका अर्थ है, “एक व्यक्ति जो कुछ है वह दूसरे लोगों के कारण ही है।”

दक्षिण अफ्रीका में, उबुन्दु ने उपनिवेशवाद और रंगभेद के इतिहास और अनुभव को एक वैकल्पिक तर्क प्रदान किया है। रंगभेद जिसके मूल शब्द अपारथाइड का शब्दशः अर्थ “अलग रहने की प्रवृत्ति” होता है, एक ऐसा कठोर स्वरूप था जो रंगभेदी अलगाव पर आधारित था। यह यूरोपीय उपनिवेशवाद से उत्पन्न हुआ और एक ऐसा वैधानिक तंत्र बन गया जो श्वेतों की प्रधानता और श्वेतों के विशेषाधिकारों पर आधारित था और इसे बढ़ावा देता था जबकि जिन्हें यह “श्वेत नहीं” मानता था उन्हें दबाता और उन पर अत्याचार करता था। रंगभेद एक प्रकार का सोशल इन्जिनियरिंग (सामाजिक परिवर्तन को अपने तरीके से व्यवस्थित करने और भविष्य में समाज के विकास और आचरण को नियंत्रित करने प्रयास में केन्द्रिकृत योजना) था, जो अलगाव और “दूसरों के प्रति” भय को बढ़ावा देता था, और ऐसा करने के द्वारा जो “श्वेत नहीं” हैं, उनके विरुद्ध किए जा रहे



अत्याचार और हिंसा को वहीं ठहराता था।

रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष के दौरान पूरे समय (जो अधिकारिक रूप से 1994 में समाप्त हुआ) और दक्षिण अफ्रीका में प्रजातंत्र के आरम्भिक वर्षों में, उबुन्दु के सिद्धांत ने प्रेरणा और दर्शन प्रदान किया। इस सिद्धांत ने इस बात को सामने लाया कि किस प्रकार से रंगभेद और इससे उत्पन्न होने वाला अलगाव और बहिष्कार न सिर्फ एक व्यक्ति के सम्मान पर प्रहार करता है, परन्तु एक व्यक्ति की मानवता पर भी! उदाहरण के लिए, डेसमंड टूट्ट, हमेशा उबुन्दु के सिद्धांत का हवाला देते थे जब भी वे रंगभेद की भेदभाव करने वाली प्रथा और इसकी विचारधारा को चुनौती दिया करते थे। वे लोगों को यह स्मरण दिलाया करते थे कि “मेरी मानवता का, स्वाभाविक रूप से, आपकी मानवता के साथ अटूट बन्धन है, और वैसे ही, आपकी मानवता मेरी मानवता का मेरी मानवता के साथ।”¹

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उबुन्दु का यह सिद्धांत एक ऐसा सिद्धांत है जिसे हम वर्तमान में अपनाना चाहेंगे। इस सिद्धांत की सहायता से हम फिलिपियों 2:3-4 को अच्छी तरह से समझ सकते हैं:

विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।

यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं।

एक दूसरे से जुड़े होने के इस प्रकार के दर्शन को अपनाने पर कुछ परिणाम भी सामने आते हैं। हमारे साथ यदि कुछ होता है, तो इसका असर दूसरों पर भी होता है। और दूसरों के साथ यदि कुछ होता है, तो इसका असर हम पर भी होता है। और इससे न सिर्फ इस बात पर असर होता है कि हम क्या हैं, परन्तु इस बात पर भी, कि हम क्या करते हैं! दूसरे शब्दों में, यह हमें एक सामाजिक दर्शन प्रदान करता है, व्यक्तिगत दर्शन नहीं!

इस प्रकार के दर्शन को साकार करने के लिए एकजुट हो कर कदम उठाना आवश्यक है। हमें मान कर चलना है कि अपनी नहीं, बल्कि हम दूसरों की मर्जी पर चल रहे हैं। इस प्रकार के आचरण को अपनाने में आनन्द की बहुत सी बातें पाई जाती हैं। परन्तु इसका अर्थ यह है कि यदि हम एक दूसरे के दुखों को साझा करते हैं: तो जब एक अंग दुख उठाता है, तो सब अंग दुख उठाते हैं।

अतः, यदि हमें स्वस्थ रहना है, तो हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि दूसरे स्वस्थ रहें। यदि हम एक ऐसा संसार चाहते हैं जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को मानव और परमेश्वर की ओर से दी गई एक भेंट समझ कर उसे आदर और मान सम्मान दिया

जाता है – तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि “इन छोटे में से छोटे” (जो सत्ता और अधिकारियों की दृष्टि में कोई मायने नहीं रखते) को प्रतिष्ठा और मानवता के लिए हमारे प्रयासों में सबसे आगे और केन्द्र में रखा जाए। बुनियादी स्तर पर, दूसरों के साथ एकजुटता का अर्थ यही है।

किन्तु, एकजुटता के जीवन का अर्थ है कि हमें दूसरों के संघर्षों को समझना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, दूसरों के साथ एकजुटता दिखाने का अर्थ यह है कि हम भी अपने द्वारा बनाई गई सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति जागरूक रहें और उनका आँकलन करें ताकि हम यह अच्छी तरह से समझ पाएं कि दूसरे क्यों और किस तरह से दुख उठा रहे हैं।

इसी में विलाप का अर्थ पाया जाता है। विलाप को समझना – किसी की पुकार, किसी की पीड़ा, किसी की वेदना को समझना – इस बात का बोध कर पाना है कि सब कुछ वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए। और यह हमारे भीतर चेतना उत्पन्न करता है (यह इससे चेतना उत्पन्न होना चाहिए) कि हम यह जाँचे कि कुछ लोग दुख क्यों झेल रहे हैं, और उन मुद्दों को चुनौती दें जो इस प्रकार का दुख उत्पन्न करते हैं। विलाप एक अवसर प्रदान करता है कि हम अपने सामाजिक दर्शन को रूप दें; यह हमें चुनौती देता है कि हम यह पहचान सकें कि वहीं क्या है, कहाँ सामंजस्य की कमी है, और किस प्रकार का परिवर्तन आवश्यक है ताकि प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की शान्ति का अनुभव कर सके।

आज हमें एक ऐसी ही कलीसिया बनने की आवश्यकता है – “बुलाए हुए”। यह एक ऐसा अवसर सामने लाती है कि हम दूसरों के साथ एकजुटता की भावना प्रगट करते हुए कलीसिया की सेवा को साकार करें: यह सुनिश्चित करने के लिए संघर्ष करें कि प्रत्येक व्यक्ति को चिकित्सा सुविधा, भोजन, आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा, तथा उचित मान सम्मान प्राप्त हो सके।

जब हम इस प्रकार की कलीसिया बनने के निमंत्रण को स्वीकार करते हैं, तो हम आशा के एक दर्शन के भागी बन सकते हैं: कि परमेश्वर हमारे साथ है, हमारे माध्यम से कार्य कर रहा है, और उसने हमें त्यागा नहीं है। यह हमें संसार के प्रति हमारी सेवा को साकार करने के लिए और मसीह की शान्ति के मार्ग की गवाही देने के लिए प्रेरित करता है जबकि हम परमेश्वर के अनेक प्रकार के ज्ञान का संसार भर में प्रचार करने में सहभागी बनते हैं।

प्रभु हमारी सहायता करे कि हम विश्वासयोग्यता से उसके कार्यों को पूरा कर सकें।

आमीन।

¹डेसमंड टूट्ट, नो फ्यूचर विथआउट फॉरगिवनेस, प्रथम संस्करण (न्यूयार्क, डबलडे, 1999), 31



आराधना की पुकार और अन्तिम आशीष वचन के लिए विधियाँ

“हम फिर से कभी सामान्य स्थिति में नहीं लौटेंगे। सामान्य कभी था ही नहीं। कोरोना से पूर्व हमारा जीवन सामान्य नहीं था, बल्कि, अन्याय, थकावट, शून्यता, अलगाव, उलझन, रोष, जमाखोरी, घृणा, और कमी घटी ही हमारा सामान्य जीवन बन चुके थे। मेरे मित्रों हमें इनकी ओर वापस लौटने के लिए नहीं तरसना चाहिए। हमें अवसर दिया गया है कि हम अपने लिए एक नई पोशाक सिले। एक ऐसी पोशाक जो सारी मानवजाति और प्रकृति के लिए उपयुक्त हो।”

– सोन्या रेनी टेलर

“कोविड 19 की कोई सीमा नहीं है। विश्व भर के लोगों का परस्पर सहयोग ही इस विश्वव्यापी महामारी को समाप्त करने का एकमात्र उपाय है। एक दूसरे पर तरस खाना ही विश्व भर की कलीसियाओं की एकमात्र उचित प्रतिक्रिया हो सकती है। आइये हम भी वैसा ही प्रत्युत्तर दें जिस प्रकार का प्रत्युत्तर आरम्भिक कलीसिया के हमारे पुरखो ने दिया था।”

– सीज़र गार्सिया

आरम्भिक प्रार्थना

हमारे स्वर्गीय पिता

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पवित्र करने वाले ज्ञान के द्वारा तूने हमें क्या ही बहुतायत की आशीष दी है,

तूने उसे इस संसार के लिए बलिदान कर दिया ताकि वह मनुष्य और परमेश्वर के बीच में शान्ति का मार्ग प्रशस्त करे।

तूने प्रभु यीशु के माध्यम से, जो हमारी एकता है, बैर की दीवार को तोड़ दिया जो हमें एक दूसरे से अलग करती थी;

परन्तु हे प्रभु, हम इस मेलबलि को या तो भूल चुके हैं, या इसे हमने अनदेखा किया है।

आज हम मान लेते हैं कि तू अनुग्रहकारी और धीरज धरनेवाला परमेश्वर है क्योंकि तूने हमारी अयोग्यता को हमारी स्वतंत्रता और हमारे हियाव में बदल दिया

कि हम यीशु के लोहू के छुटकारा देनेवाले कार्य के माध्यम से तेरी उपस्थिति में घुटने टेक सकते हैं।

और जबकि हम तेरे पवित्र आत्मा के माध्यम से तेरे साथ सहभागिता करते हैं, हम यीशु मसीह की महिमामय मीरास के धन को स्मरण करते हैं जो सब पवित्र लोगों को एक साथ दिया गया है।

हे प्रभु परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं।

हे प्रभु हम जानते हैं कि तू अपने विभिन्न प्रकार के ज्ञान को कलीसिया के माध्यम से, पृथ्वी और स्वर्गीय स्थानों के हाकिमों और प्रधानों पर प्रगट करना चाहता है।

हम, जो मसीह की देह हैं, तेरे इस अनन्त उद्देश्य के महत्व को स्वीकार करते हुए

तेरे सिंहासन के पास आते हैं कि इस भयानक और अंधकारमय समय में, अपने अपने देशों की ओर से बिचवई के रूप में खड़े हो सकें।

हे पिता हमें क्षमा कर, हमने अपने भाई और बहनों के साथ शान्ति के बन्धन को, लापरवाही और खतरनाक कामों, व अन्यायपूर्ण कानूनों और असंवेदनशील शब्दों के माध्यम से तोड़ डाला है।

हम तेरे दरबार में एक दोषी के रूप में खड़े हुए हैं और हमारे सिर लज्जा से झुके हुए हैं।

क्या हमें तेरा ध्यान उन करोड़ों लोगों की दुर्दर्शा की ओर खींचने की आवश्यकता है,

जो कोविड-19, समुद्री तूफानों, टिड्डियों के हमलों, नस्लवाद,



जातिवाद और अत्याचारों से पीड़ित हैं?
हम एक ऐसे तंत्र का हिस्सा बन चुके हैं
जो पुलिस की बर्बरता, और राजनैतिज्ञों के भड़काऊ भाषणों को
प्रोत्साहित करती है,
अफसरशाही की अपराधिक लापरवाहियों को अनदेखा करती है,
सत्ता का पक्ष लेनेवाली कट्टर राष्ट्रवादी मीडिया को हाथोंहाथ
उठा लेती है और न्याय व्यवस्था की उदासीनता को चुपचाप
देखती रहती है।

हे प्रभु परमेश्वर, हम अत्यंत दुःखित हैं!

हे पवित्र आत्मा, हमें ऐसी कलीसिया बना, जो यह समझ जाए कि समाधान
“हम” में पाया जाता है, “मैं” में नहीं।

हमें बार बार यह स्मरण दिला कि यदि एक अंग दुःख पाता है, तो पूरी देह
दुःख पाती है।

हमारा मार्गदर्शन कर कि हम सर्वाधिकारी प्रभु के द्वारा हमें बहुतायत से
प्रदान किए गए संसाधनों को लेकर

खोए हुआ, भटके हुआ, बहिष्कृत किए हुआ, और कंगालों की
सुधि लें।

प्रत्येक मसीही को यह फिर से स्मरण दिला दे

कि हमें अपनी बुलाहट के अनुरूप जीवन व्यतीत करना है

और प्रेम का सर्वोत्तम प्रदर्शन कार्यों के माध्यम से ही किया जा
सकता है।

कलीसिया के अगुवों को साहस प्रदान कर कि वे सत्ता में बैठे लोगों
प्रेमपूर्वक सत्य कह सकें

ताकि राष्ट्रों में न्याय और धर्म बहने लगे।

हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, इस कठोर समय में हम तेरी भलाई के लिए स्वर्ग
की ओर ताकते हैं

ताकि थके हुए को विश्राम मिले,

बेघर को शरण मिले,

भूखे तृप्त किए जाएं,

शरणार्थियों को लोग स्वीकार करें,

और बन्धुओं को छुटकारा मिले और शान्ति जो समझ से परे है,

प्रबल हो जाए।

अन्त में, हे प्रभु, हमारी सहायता कर, कि हम एक दूसरे को सह सकें, एक
दूसरे का बोझ उठा सकें

और इस असिद्ध संसार में मसीह के सिद्ध प्रेम को पूरा कर सकें।

हे प्रभु, अपना तेज चमका और तुझे आदर, महिमा, और प्रशंसा मिले
जिसके योग्य तू ही है।

हे प्रभु परमेश्वर, तेरा धन्यवाद हो।

यीशु के अतुलनीय नाम में, आमीन।

रविन्द्र राज, भारतीय जुक्ता ख्रिस्ता प्रचार मण्डली
(यूनाइटेड मिशनरी चर्च) भारत द्वारा एक प्रार्थना।

अन्य प्रार्थनाएं और विधियाँ

विश्वव्यापी महामारी के लिए प्रार्थना

हम जो, सिर्फ कुछ असुविधाओं का ही सामना कर रहे हैं,
उन लोगों को स्मरण करें जिनका जीवन दाँव पर लगा हुआ है।

हम, जिन पर कोई जोखिम नहीं है,

उन लोगों को स्मरण करें जो अत्यंत नाजुक परिस्थितियों में हैं।

हम जो, आराम से अपने घरों पर ही रह कर अपने कार्यों को पूरा कर रहे हैं
उन लोगों को स्मरण करें जिन्हें अपने स्वास्थ्य की चिन्ता करने या अपने
घरों का किराया चुकाने में से किसी एक को चुनने के अलावा कोई

विकल्प नहीं है।

हम जो, बच्चों का स्कूल बन्द होने के कारण

उनका अच्छे से ध्यान रख सकते हैं

उन लोगों को स्मरण करें जिनके पास कोई विकल्प नहीं है।

हम जिन्हें, अपनी यात्राएं स्थगित करनी पड़ी

उन लोगों को स्मरण करें, जिनके लिए कोई सुरक्षित स्थान नहीं है, जहाँ वे
जा सकें।

हम जो, अपनी जमापूँजी इस आर्थिक उथल पुथल में गवाँते जा रहे हैं

उन लोगों को स्मरण करें, जिनके पास कोई जमापूँजी ही नहीं है।

हम जो, अपने घरों पर ही क्वारन्टाइन रहे

उन लोगों को स्मरण रखें जिनके पास घर ही नहीं हैं।

जबकि हमारे देश को भय जकड़े हुए है,

आइये हम एक दूसरे से प्रेम रखें।

इस समय, जबकि हम एक दूसरे को गले नहीं लगा सकते,

आइये, ऐसे मार्ग निकालें कि अपने पड़ोसियों के लिए गले लगाने वाली
परमेश्वर की बाँह बन जाएं।

आमीन।

केमरून बेल्लम, ए कन्सोलिंग एम्ब्रेस से लिया गया:

केमरून बेल्लम द्वारा प्रेयर फॉर ए टाइम ऑफ पेन्डेमिक। ट्वेंटी थर्ड
पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित 2020।



पवित्रशास्त्र से कुछ शिक्षाएं



मेनोनाइट लोग दक्षिण यूएसए की सीमा पार करते प्रवासियों के साथ एकजुटता प्रगट करते हुए उनके साथ चलते हुए। फोटो: सालो पडिला

चोट के साथ साथ चलना

—केनथ होक (यूएसए)

चर्चा के लिए प्रश्न (छोटे समूहों में)

निम्नलिखित प्रश्नों पर आराधना के दौरान मण्डली चर्चा कर सकती हैं:

1. “हमारी” दुनिया में कौन हमें चोट पहुँचा रहा है? अपने समुदाय और अपने परिचितों को ध्यान में रखते हुए पहले विचार करें, और फिर बाहर के लोगों के विषय में चर्चा करें।
2. इस समय जो लोग हमारे आसपास हैं, उन्हें हमें छोड़ और कोई दूसरा सहन नहीं कर पाएगा। हम उनके साथ किस प्रकार से चल रहे हैं?
3. प्रभु यीशु की शान्ति किस प्रकार से हमें उनके साथ चलने की बुलाहट देती है?

पवित्रशास्त्र से मनन

1 कुरिन्थियों 12:12-27

परमेश्वर के लोग होने और संसार में परमेश्वर की बुलाहट के अनुरूप जीवन बिताने की चुनौती, हमेशा कलीसिया के भीतर से ही आरम्भ होती है। 1 कुरिन्थियों 12 इस वास्तविकता को हम पर प्रगट करता है। अपनी मण्डली में एक दूसरे का साथ देने की चुनौती को हम किस प्रकार से पूरा कर रहे हैं? क्या मसीह की देह में किसी प्रकार की कोई चुनौती है जो शान्ति की बजाए झगड़े उत्पन्न कर रही है? क्या हम पद या अधिकार के लिए एक दूसरे के साथ होड़ कर रहे हैं? हम इन चुनौतियों का सामना किस प्रकार से कर रहे हैं?

आप अपने समुदाय में एक दूसरे की सुधि किस प्रकार से लेते हैं? हम इस शिक्षा को किस प्रकार से साकार कर रहे हैं और मसीह के अनुयायियों के रूप में किस प्रकार से ऐसी जीवनशैली को बढ़ावा दे रहे हैं?

उदाहरण दे कर बताएं कि हमें किस प्रकार से एक दूसरे की आवश्यकता है। अपने समुदाय में दुख सह रहे लोगों के साथ खड़ा होने की चुनौती को हम किस प्रकार से ग्रहण करते हैं? हम इस यात्रा में किस प्रकार से सहभागी बनते हैं?

अपने ही समुदाय के लोगों के साथ आनन्द मनाने और उन्हें सम्मान देने का अवसर हम किस प्रकार से उत्पन्न कर सकते हैं? हम इस यात्रा में किस प्रकार से सहभागी बन सकते हैं?

रूत 1:1-17

रूत और नाओमी की कहानी हमारे संसार के विस्थापितों की ओर हमारा ध्यान ले जाती है। दूसरी जाति के लोगों के बीच परदेश में जाकर भोजन की तलाश में यात्रा हमारे वर्तमान संसार में भी व्यापक सच्चाई है। नाओमी ने अपने देश से मोआब की यात्रा के दौरान इस बात का अनुभव किया और फिर रूत ने भी इस बात का अनुभव किया जब वह अपने नए घर को आती है।

हम वर्णन में हम यह देखते हैं कि विस्थापित लोगों को एक नया घर मिलता है। वे अपने आप को नए स्थान में स्थापित कर लेते हैं, विवाह करते हैं, और कम से कम रूत की सन्तान भी उत्पन्न होती है। रूत अपने नए देश में इतने अच्छे से घुलमिल जाती है कि मल्ली 1 में यीशु मसीह की शारीरिक वंशावली में उसे भी स्थान दिया गया है।

वर्तमान संसार के विस्थापित लोगों के साथ खड़ा होने के विषय में हम इस कहानी से क्या सीखते हैं? परदेशियों, प्रवासियों, विस्थापितों को अपने समुदाय में स्वीकार कर उन्हें प्रभु यीशु मसीह की शान्ति से अवगत करने का अवसर हमें कहाँ कहाँ प्राप्त हो सकता है?

हम किस प्रकार से ऐसे विस्थापितों का साथ दे सकते हैं जो हमारे समुदाय के बाहर के हैं? उनकी परिस्थितियों में यीशु की शान्ति को स्थापित करने में क्या क्या चुनौतियाँ हैं?

गलातियों 6:1-5 और इफिसियों 4:1-6

इन दो स्थलों में, एक बार फिर से जीवन की यात्रा में एक दूसरे के साथ चलने की चुनौतियों के विषय में हम देख सकते हैं। यहाँ पर कलीसिया को ध्यान में रख कर बात कही गई है, परन्तु जैसा कि हम पहले ही यह देख चुके हैं, कि परमेश्वर चाहता है कि हम एक दूसरे का साथ दें और यह भी इस संसार में हम दूसरों का भी साथ दें।

कलीसिया के भीतर, एक दूसरे का साथ देने में हमारे सामने क्या चुनौतियाँ आती हैं? यह दुखद है, कि हमारे लिए अधिक सरल यह हो जाता है कि हम एक दूसरे से अलग हो जाएँ बजाए कि अपने समुदाय में शान्ति और मेलमिलाप के लिए कठिन परिश्रम करें।

हम किस प्रकार से एक दूसरे के साथ नम्रता से मेलमिलाप करते हैं, एक दूसरे के साथ धीरज धरते हैं, और एक दूसरे का बोझ उठाते हैं?



हम किस प्रकार से एक दूसरे से प्रेम रखते हैं और आत्मा की एकता बनाए रखते हैं?

यह हमारे सामने एक चुनौती है कि हमें किस प्रकार से अपनी कलीसिया के भीतर अपने आपसी सम्बन्धों में मसीह की शान्ति को साकार करना है। यह परमेश्वर के लोगों के रूप में सामान्य मसीही जीवन को एक चुनौती है। क्यों? क्योंकि हमारी एक ही आशा, हमारा एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही परमेश्वर और एक ही पिता है।

वह पवित्र आत्मा कहाँ है जो हमें एक कलीसिया के रूप में हमारे प्रतिदिन के जीवन में एक दूसरे के साथ अनुग्रह का जीवन व्यतीत करने के लिए कहता है? यह दिमागी ज्ञान नहीं है: यह आपसी सम्बन्धों की एक वास्तविकता है जिसे साकार करने के लिए यीशु के चेलों के रूप में हमें बुलाया गया है।

उपसंहार

आइये फिर से हम अपने आरम्भिक तीन प्रश्नों की ओर वापस जाएं। समापन में साथ मिलकर इन प्रश्नों का किस प्रकार से उत्तर दे सकते हैं?

जब हम परमेश्वर के वचन को सुनते और इसका पालन करते हैं, तो परमेश्वर हमसे क्या चाहता है?

चर्चा और कार्यों के लिए – आपके समुदाय के लिए जो भी अधिक उपयुक्त हो – अवसर प्रदान करें।

एक दूसरे को बताएं कि पवित्र आत्मा आपसे क्या कह रहा है। एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें। आत्मा कलीसिया से क्या कह रहा है, उसे सुनकर पूरा करने समय एक दूसरे के साथ खड़े हों।

केनेथ होक ने ब्रदरन इन खाइस्ट चर्च यूएसए में दशकों तक एक पासवान और काँफ्रेंस अगुवा के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं।





गवाहियाँ

“मेरे हृदय में शान्ति”

– मितसुरू इशिदो (जापान)

पहला पद:

इसुनो कोकोरो उकिनि (यीशु का हृदय मेरे हृदय में झलकता है)

दूसरा पद:

इसुनो हियवा उकिनि (मेरे हृदय में यीशु की शान्ति है)

मितसुरू इशिदो ने यह गीत मेनोनाइट चर्च के अपने एक साथी नासु केयको को उत्साहित करने के लिए लिखा, जो शरणार्थियों, विदेशी छात्रों, और फेफड़े की समस्याओं से जूझ रहे कलीसिया के एक सदस्य के लिए मुफ्त में मास्क सिला करता था। मितसुरू ने यह गीत ओकिनावा के पेन्टाटोनिक स्केल के आधार पर तैयार किया है और वह इसे सानशिन नामक जापान के ओकिनावा द्वीप में बजाए जाने वाले तीन तार वाले पारम्परिक जापानी वाद्य पर बजाते हैं।

ओकिनावा का शान्ति और युद्ध का एक इतिहास है। एक समय ओकिनावा रायूक्यू राज्य था, और उस समय से यह पारम्परिक रूप से शान्ति का एक द्वीप रहा है; एक ऐसा द्वीप, जहाँ हथियार नहीं पाए जाते। 300 वर्ष तक, रायूक्यू ने हथियारों की बजाए संगीत और नृत्य का कूटनीतिक प्रयोग करते हुए अपनी स्वतंत्रता को कायम रखा।

“शान्ति के राजकुमार” के रूप में यीशु का हृदय और रायूक्यू द्वीप का “शान्ति का हृदय” यह सामान्य गवाही देते हैं, इसलिए मैंने रायूक्यू के पारम्परिक स्केल का उपयोग करने का प्रयास किया। मैंने इस गीत को ओकिनावा के शेमिसेन (सानशिन) नामक एक पारम्परिक वाद्य यंत्र पर बजाया है जिसमें तीन तार और साँप की चमड़ी का ढोल (ड्रम) होता है। वर्तमान समय में, रायूक्यू राज्य को जापान के शिमान्डूजे हान के साथ जोड़ दिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध से पहले, यहाँ सैन्य हथियारों का निर्माण किया जाता था। वर्तमान में, यहाँ, द्वीप की शान्ति की भावना को अनदेखा कर, “कीस्टोन ऑफ पेसेफिक” नामक युद्धकौशल सम्बन्धी एक छावनी आरम्भ कर दिया गया है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, जापान में सबसे भयानक जमीनी लड़ाई ओकिनावा में ही लड़ी गई। टोक्यो के मुख्य शहर के मुख्यालय को बचाने के लिए, लम्बे समय तक चले अभियान में बहुत से नागरिक और सैनिक मारे गए। वे गामा नामक चूने की गुफाओं में छिप गए, परन्तु अन्त में नागरिक बाध्य हो गए कि वे मृत्यु को चुने, बजाए कि, शत्रु द्वारा पकड़े जाएं और गुप्त जानकारियाँ जाहिर कर दें।

इसके कारण अधिकांश लोगों ने स्वयं होकर अपने आप को समाप्त कर लेने का निर्णय लिया।

परिवार में अपनी माता या अपनी बेटी को अपने ही हाथों मार डालने और फिर



मितसुरू इशिदो एक सानशिन के साथ, यह तीर तारों वाला एक वाद्ययंत्र है, जिसका प्रयोग जापान के ओकिनावा द्वीप में किया जाता है

स्वयं आत्महत्या करने का प्रयास करने की त्रासदी ने बहुत से घाव छोड़े हैं।

युद्ध के बाद, निवासियों को शिविरों में नजरबन्द कर दिया गया। भूख सबसे बड़ी समस्या बन गई क्योंकि यूएस सेना के बेस ने घरों और खेतों को अपने कब्जे में कर लिया।

किन्तु, नजरबन्दी शिविरों में पंगु जीवन के मध्य, ओकिनावा के लोगों ने संगीत के माध्यम से शान्ति की अपनी परम्परा की स्थापना की। कूड़े से उठाए गए डिब्बों से वाद्य यंत्र बनाने के द्वारा उन्होंने अपनी जीविका का प्रबन्ध किया। इन्हें श्रेण कैन साशिन कहा जाता है।

संगीत और शान्ति से प्रेम करने वाला ओकिनावी स्वाभाव अब भी नहीं मरा है। यद्यपि अनेक बार कुचले गए, परन्तु शान्ति और संगीत की नींव पर जीवन बिताने वाले स्वाभाव ने आज तक ओकिनावा के संगीत को जीवित बचाए रखा है।

मितसुरू इशिदो मेनोनाइट चर्च इन जापान की एक कलीसिया चिकू मेनोनाएटो क्याकाय रेंगो के लिए जनरल काँसिल प्रतिनिधि हैं।

मितसुरू इशिदो को वाद्य यंत्र के साथ गीत गाते हुए सुनने के लिए देखें,

mwc-cmm.org/peace-sunday



सैंगमीन ली को सरकारी माफी (राजक्षमा)

सिऑंगहान किम (दक्षिण कोरिया)

वर्ष 2019 के अन्तिम दिन, मंगलवार, 31 दिसम्बर को सैंगमीन ली ने मुझे फोन कर बड़े उत्साह के साथ यह खबर दी कि उन्हें सरकार की ओर से माफी मिल गई है।

2014 के आरम्भ में, ली को 18 महीनों तक जेल में रहने की सजा सुनाई गई थी, क्योंकि उन्होंने अपने विश्वास के कारण, सरकार के इस नियम का पालन करने से इंकार कर दिया था कि देश के प्रत्येक नागरिक के समान ही उन्हें भी सेना में एक निश्चित अवधि तक सेवाएं देना अनिवार्य है।

यद्यपि 15 महीनों की सजा के बाद ली को 30 जुलाई, 2015 को रिहा कर दिया गया था, परन्तु सैन्य सेवाओं को पूरा करने से इंकार करने के उन पर लग चुके अपराधिक प्रकरण के कारण अनेक व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और सरकारी संस्थानों में नौकरी प्राप्त कर पाना उनके लिए असम्भव हो गया था।



सैंगमीन ली रिहाई के बाद अपनी पत्नी शाइम और पुत्र सेओजिन के साथ।

फोटो: साभार

यद्यपि वर्ष के अन्त में मैंने 5,174 लोगों को विशेष रूप से क्षमा किए जाने का समाचार सुना था, परन्तु मैंने यह कल्पना नहीं किया था कि ली भी उन 1,879 कॉशियंस आब्जेक्टरों (सेना में अनिवार्य रूप से सेवाएं देने के सरकारी आदेश का पालन करने से इंकार कर देना वाला) में से एक होंगे जिन्हें इस समय विशेष माफी प्राप्त हुई थी। इस निर्णय का आधार 2018 में न्यायालय के द्वारा दी गई व्यवस्था थी जिसे कॉशियंस आब्जेक्टरों द्वारा दशकों से बार बार किए जा रहे इस निवेदन को ध्यान में रख कर किया गया था कि उनसे सेना में काम करने के बदले और कोई दूसरा विकल्प दिया जाए।

27 दिसम्बर 2019 को, नेशनल असेम्बली ऑफ रिपब्लिक ऑफ कोरिया में अन्ततः यह बिल पारित कर दिया गया जिसमें कॉशियंस आब्जेक्टरों को सेना के बदले 36 माह के लिए कहीं और सेवाएं देने की अनुमति दे दी गई। अब तक, देश के सभी युवाओं को 21 महीनों तक सेना में या 23 या 24 महीनों तक नेवी या एयरफोर्स में सेवाएं देना अनिवार्य था।

अब कम से कम, कॉशियंस आब्जेक्टर के लिए रिपब्लिक ऑफ कोरिया में एक वैकल्पिक सेवा उपलब्ध हो गई है।

किन्तु, यह विकल्प एक विकल्प की बजाए एक सजा अधिक प्रतीत होता है। दिसम्बर 2019 में, रक्षा मंत्रालय (विधि मंत्रालय नहीं) ने एक संशोधित बिल की घोषणा की। इस बिल के अनुसार, कॉशियंस आब्जेक्टरों को 36 महीनों तक सुधार केन्द्र में कार्य करने का विकल्प होगा। उन्हें सुधार केन्द्र के भीतर रहना होगा, और वे वहाँ से कहीं नहीं जा सकते। रक्षा मंत्रालय उनकी निगरानी करेगा।

अन्य कॉशियंस आब्जेक्टरों के समान सैंगमीन ली ने अपने विश्वास और अपने विवेक को प्राथमिकता देते हुए बन्दी के रूप में अपना समय पूरा किया। उन्हें मिली जेल की सजा और “36 महीने सुधार केन्द्र में बिताने” के बीच में क्या अन्तर है – सिवाय एक बड़ी हुई अवधि के?

यह खुशी की बात है कि सैंगमीन ली को अन्य 1800 से अधिक लोगों के साथ अन्ततः कोरियाई समाज में पुनः पूर्ण दर्जा दे दिया गया है। यह दुख की बात है, कि अब कॉशियंस आब्जेक्टरों को एक बड़े जेल में अधिक लम्बी अवधि तक रहने के लिए स्वयं को तैयार करना पड़ेगा। उन्हें सच्ची राजक्षमा कब प्राप्त होगी?

विवेक की आवाज सुनकर हिंसा का इंकार करने वाले लोगों के लिए प्रार्थना करें। उन्हें सच्ची राजक्षमा या विशेष माफी मिले।

सियोग हान किम एमसीसी नार्थइस्ट एशिया पीस एजुकेटर हैं जो दक्षिण कोरिया के गोंगवोन-डो में निवास करते हैं। मेनोनाइट वर्ल्ड कॉफ्रेंस की यह विज्ञप्ति का प्रकाशन पहली बार बियरिंग विटनेस स्टोरिज़ प्रोजेक्ट में किया गया।

<https://martyrstories.org/>

ली से सम्बन्धित अन्य लेखों के लिए पढ़ें:

mwc-cmm.org/node/373

mwc-cmm.org/node/418

mwc-cmm.org/node/625



एक स्थायी मांग

– स्टीव हेयरिक्स (कनाडा)

“आप मेनोनाइट लोग कहाँ हैं?”

विन्नीपेग के एक कैफे में मैं और मेरी एक सहपाठी आदिवासियों की भूमि से सम्बन्धित वर्तमान संघर्षों के विषय में बातचीत कर रहे थे। वे उसिस ओट एन, मुस्कृत फॉल्स, और टाइनी हाउस के वीरों के विषय में बता रही थी और मैं उन्हें ध्यान से सुन रहा था। मैं अपना सिर हिलाते हुए उन्हें यह जता रहा था कि मैं उनकी बातों को समझ रहा हूँ, और बीच बीच में हामी भी भरता जा रहा था। परन्तु, चाय पीते पीते, बीच में ही, उन्होंने अपना धीरज खो दिया और मेरी ओर देखते हुए बोलीं,

“आप मेनोनाइट लोग कहाँ हैं? आप लोग अपने पुराने शहीदों के विषय में तो काफी कुछ बताते हैं। हमारी ओर तो देखें – हम यहाँ कष्ट झेल रहे हैं और मर रहे हैं! अब आपके शहीद कहाँ गए?”

मैं हक्का बक्का रह गया, मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहूँ और क्या करूँ। मैं यह अंगीकार करता हूँ कि कलीसिया अक्सर निर्धनों के साथ खड़ी हो कर उनके सामने मण्डराने वाले खतरों का सामना करने में असफल रही है। मैंने उन्हें बताया कि हम इन मुद्दों पर क्या कर रहे हैं, और हमें क्या करने की आवश्यकता है। परन्तु उन्होंने मेरी बातों की परवाह नहीं की। वे मेरी बातों से ध्यान हटा कर खिड़की से बाहर दूर देखने लगीं। एक मिनट तक हम चुपचाप बैठे रहे और उसके बाद वहाँ से उठ कर अलग अलग रास्तों पर चले गए।

अपनी बाइक पर घर लौटते हुए, मेरे मन में लगातार उनकी पुकार गूँज रही थी, “अब आपके शहीद कहाँ गए?” मैं अपना बचाव करना और इन बातों से स्वयं को दूर करना चाह रहा था। तौभी मेरा हृदय इस पुकार को सुन रहा है – पृथ्वी के लिए, कंगालों के लिए, और यहाँ तक कलीसिया के लिए।

मैं अपने आफिस में, पसीने से लथपथ कपड़ों में, अपने द्वारा सजाई गई दीवार की ओर देखने लगा और प्रार्थना करने लगा। दीवार पर शहीदों की तस्वीरें और सन्तों के वचन टंगे हुए थे – यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, मार्टिन किंग, इलाक्यूरिया, इत्यादि। मेरी आँखें एक जगह पर जा कर टिक गईं – यह एक एशियाई कैथोलिक बिशप का 42 वर्ष पुराना एक कथन था:

“जब तक कलीसिया के सेवक न्याय के लिए शहीद होने के लिए तैयार नहीं होंगे और (अत्याचार सह रहे लोगों के) जीवन से बाहर और ऊपर रह कर जीवन बिताएंगे, तब तक वे शायद ही कोई असर छोड़ पाएंगे।”

मैंने एक लम्बी साँस ली और अपनी आँखों को बन्द कर लिया।

अनेक मेनोनाइट लोगों के समान, मैं भी 16वीं शताब्दी में ऐनाबैपटिस्ट लोगों पर आए घोर सताव की कहानियों को मन में बसाए रहता हूँ। अनेक लोगों के समान मुझे भी क्रूस पर चढ़ाए हुए प्रभु की भयावह स्मृतियाँ सताती हैं – “अपना क्रूस उठा, और मेरे पीछे चला।” तौभी ऐसी गवाहियाँ को मैं अत्यंत प्रबल महसूस करता हूँ।



स्टीव हेयरिक्स कनाडा के मोनिटोब की एक अन्य ट्रांसमिशन लाइन, एनब्रिज लाइन 3 पर चर्चा करने के लिए आदिवासी अगुवों, कलीसिया के अगुवों और जागरूक नागरिकों के साथ मुलाकात किया। फोटो: केथी मूरहेड थीज़न

क्या मैं मसीह के समान उद्धार के भार को उठाने के लिए तैयार हूँ? एक ऐसी कलीसिया में, जो नियमतः शहीदों को स्मरण करती है, क्या मैं अपनी शिक्षाओं के अनुसार चलने के लिए तैयार हूँ, या मैं सिर्फ अंगीकार को रटने के ही खतरनाक खेल में लगा हुआ है?

मैंने अपना फोन उठाया, और कनेडियन मेनोनाइट यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र और धर्मविज्ञान के प्राध्यापक क्रिस ह्यूबनेर को संदेश भेजा, जो शहादत के विषय पर शिक्षा देते हैं। कुछ ही समय बाद, हमने दो घण्टों के लिए एक स्थानीय रेस्टोरेंट में मुलाकात किया। जब क्रिस ने अपनी बात मुझसे कही, तो मैं यह सीखा कि

1. **मृत्यु नहीं, परन्तु अनुकरणीय गवाही का जीवन मायने रखता है।** अपनी परम्परा में, कलीसिया ने शहीदों को – जो अपनी गवाही के कारण मारे गए – और विश्वास का अंगीकार करने वालों को – जिन्होंने सताव के बाद भी अपने विश्वास की गवाही दी और जीवित बच गए – को हमेशा ऊँचा दर्जा दिया है। हम शहीदों का निर्माण तो नहीं कर सकते परन्तु अवश्य ही बहुमूल्य जीवन जीने का चुनाव कर सकते हैं।
2. **हमारे बीच भी शहीद पाए जाते हैं।** क्रिस कहते हैं, “यदि हम परमेश्वर और कलीसिया के विषय में उन बातों पर विश्वास करते हैं जिन बातों पर मसीहियों ने पारम्परिक रूप से विश्वास रखा है, तो शहीदों का तो प्रश्न ही खड़ा नहीं होता।” वे कौन हैं, और वे कैसे दिखाई देते हैं, यह तो काफी कठिन प्रश्न होगा। क्रिस आगे कहते हैं, “तौभी, यदि हम मसीह और कंगालों के विषय में जो कुछ कहते हैं, उस पर विश्वास करते हैं, तो इस बात पर कोई सन्देह नहीं कि कनाडाई सन्दर्भ में मूलनिवासियों की कहानियाँ शहीदों से भरपूर हैं।”



उस शाम, अपनी बाइक पर घर लौटते समय, मेरा हृदय इस अमूल्य वार्तालाप के लिए आभारी था, और अनेक अन्य प्रश्नों से भरा हुआ था।

परन्तु मैं समझ गया कि मुझे यही चाहिए। अब्राहम हेशेल (1907-1972), एक बुद्धिमान यहूदी थे जिन्होंने हमेशा दृढ़ता से अपनी आवाज उठाई, उन्होंने एक बार कहा,

“परमेश्वर की आवाज उठाने वाला जन ऐसे लोगों को तुच्छ जानता है जिनके लिए परमेश्वर की उपस्थिति का अर्थ सुख सुविधा और सुरक्षा है; उसके लिए परमेश्वर की उपस्थिति का अर्थ एक चुनौती है, और लोगों द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हम से की जा रही एक स्थायी मांग है।”

उस रात अपने बिस्तर पर, मैंने धीरे-धीरे खो चुकी अपनी सहपाठी की मांग पर चिन्तन किया – “मेनोनाइट विश्वासियों, आप कहाँ हैं?” – और मुझे व्याकुल करने वाले और पवित्र प्रश्न के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

स्टीव हेनरिक मेनोनाइट चर्च कनाडा के इन्डिजिनियस सेन्ट्रल रिलेजियस में निदेशक के रूप में अपनी सेवाएं देते हैं। अपनी पत्नी एन और 3 बच्चों के साथ, स्टीव विन्नीपेग में रहते हैं और होप मेनोनाइट चर्च, ए कम्युनिटी ऑफ जीजस फालोवर्स के एक सदस्य हैं।

यह लेख सबसे पहले कनाडियन मेनोनाइट में प्रकाशित हुआ। अनुमति से प्रकाशित।

canadianmennonite.org/stories/incessant-demand

फ्रेंच गुयाना के वयाना लोगों के साथ एकजुट हो कर खड़े होना

– सारा आगस्टीन (यूनाइटेड स्टेट्स)

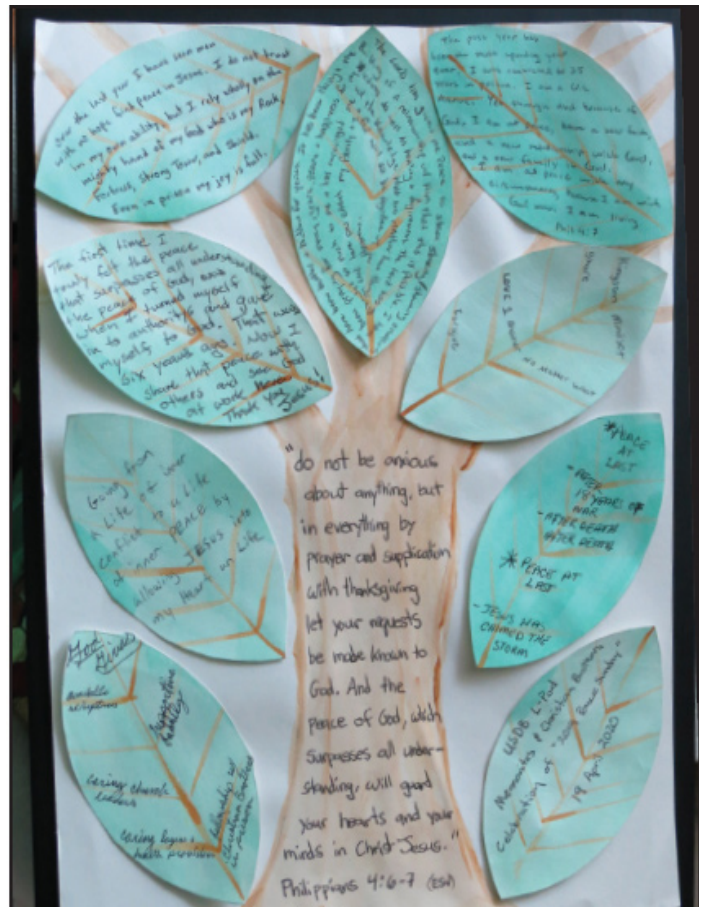
“जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए। यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले मानों परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और साप्ताज्य युगानुयुग उसी का है। आमीन।”
(1 पतरस 4:10-11)

जुलाई 2019 में, मेरी एक मित्र लिनिया सोम्पर ने मेरे पति डेन और मुझ से आग्रह किया कि हम उसके समुदाय के लोगों की जाँच कर यह जानने में उसका सहयोग करें कि मरकरी का उन पर कितना दुष्प्रभाव हो रहा है। लीना फ्रेंच गुयाना के टालल्यून समुदाय में निवास करती है, जो ऊपरी मारुनी नदी के तट पर एक ऐसे सुदूर क्षेत्र में बसा हुआ है जहाँ अत्याधिक वर्षा के कारण घना वन है। लिनिया के समुदाय का भोजन सोना की खानों में खनन के कारण दूषित हो चुका है।

गुयाना शिल्ड दक्षिण अमेरिका का एक क्षेत्र है जिसमें सुरिनाम, फ्रेंच गुयाना और उत्तरी ब्राजील शामिल हैं। जैसा कि संसार भर के मूलनिवासियों (आदिवासियों) की स्थिति है, लिनिया के समुदाय के लोगों का भी उनकी ही पारम्परिक भूमि पर कोई अधिकार नहीं है और न ही वहाँ सरकार द्वारा किए जाने वाले किसी भी कार्य पर कोई नियंत्रण है।

जब सरकार आदिवासियों की भूमि पर या भूमि के पास स्वर्ण खनन के लिए मंजूरी देती है, तो वहाँ रहने वाले लोगों को सरकार या व्यापारियों के हितों के विरुद्ध बोलने का अधिक अधिकार नहीं होता।

लिनिया वयाना जाति की हैं, तथा वयाना व ऊपरी मरोनी नदी के तट पर रहने वाले अन्य लोग अपने मुख्य भोजन के लिए मछली पर निर्भर रहते हैं। स्वर्ण खनन से मछली दूषित हो जाती है क्योंकि मछली की त्वचा में भारी मात्रा



अमरीका के सुधारग्रह में सेना के बन्दी लिबनवर्थ ने शान्ति रविवार की मार्गदर्शिका की सहायता से एक शान्ति वृक्ष तैयार किया।



में धातु के जैविक जमा हो जाते हैं। मरकरी जैसे भारी धातु शरीर में आने से तंत्रिका सम्बन्धी अनेक बीमारियों, समय पूर्व मृत्यु, और समुदाय में दुर्घटना या विस्थापन जैसी गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

यद्यपि फ्रांस की सरकार लगातार आदिवासियों के शरीर में मरकरी विषाक्तता की उपस्थिति की जाँच करती है, परन्तु इसके परिणामों को समुदाय के सदस्यों के साथ साझा नहीं करती।

एक माता के रूप में, लिनिया महसूस करती है कि उसे यह बताया जाना चाहिए कि स्वर्ण खनन से उसके बच्चों को क्या खतरे हैं।

उसने अन्य लोगों के साथ मिलकर एक संस्था की स्थापना की जो कि पीड़ित लोगों के मध्य एक दूसरे की सहायता और एकजुटता को बढ़ावा देती है ताकि इस समस्या का हल निकाला जा सके।

मैं एक उत्तरी अमरीका आदिवासी महिला हूँ, और तेवा जाति से आती हूँ। मैं जानती हूँ कि असहाय होने का अर्थ क्या होता है, एक ऐसे संसार में अदना सा व्यक्ति जहाँ कानून और नीतियाँ कभी मेरे परिवार और मेरे लोगों के हित का ध्यान नहीं रखती।

जब लिनिया ने मुझसे सहायता का निवेदन किया कि मैं उसके लोगों पर मरकरी के दुष्प्रभाव पर एक दस्तावेज तैयार करूँ, तो मैं और डैन तुरन्त ही तैयार हो गए।

मेरे पति और मैंने 2004 में गुयाना शिल्ड में मूलनिवासियों और आदिवासियों के साथ कार्य करना आरम्भ किया था। हमने सेवाभाव से अमरीका में सुरिनाम इंडिजिनियस हेल्थ फण्ड की स्थापना की ताकि गुयाना क्षेत्र के मूलनिवासियों को ऐसी सामगियाँ और तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराया जा सके कि वे स्वयं हो कर अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें।

यद्यपि हमारे पास आवश्यक उपकरण उपलब्ध थे, परन्तु एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट आरम्भ करना चुनौतीपूर्ण और कठिन था जिसके तहत हम नमूना प्राप्त कर सकें और जाँच के परिणाम प्रभावित समुदाय के सदस्यों को भेज सकें।

जब हम वाशिंगटन में अपने घर वापस लौटे, तो मैंने डिसमेंटलिंग द डॉक्ट्रिन ऑफ डिस्कवरी कोयलिशन से सहायता के लिए आग्रह किया। उन्होंने यूएसए में अपने नेटवर्क से सम्पर्क किया, और मरकरी जाँच किट की हमारी आवश्यकता को पूरा करना अपना वर्षांत तक का अभियान बना लिया। इसके प्रत्युत्तर में, सान फ्रांसिस्को, कॉलिफोर्निया, यूएस के शालोम मेनोनाइट चर्च के युवा समूह ने क्रिसमस के अवसर पर जाँच किट के लिए धन जमा करने के लिए एक विशेष योजना तैयार किया।

कोयलिशन की सहायता से, हम जाँच किट के लिए धन राशि का प्रबन्ध कर

पा रहे हैं और एक ऐसा ढाँचा तैयार करने में निवेश कर रहे हैं जिससे कि हम लिनिया और गुयाना शिल्ड के अन्य दूरस्थ समुदायों के साथ सम्पर्क कायम रख सकें।

यद्यपि लिनिया और उसके समुदाय के स्वास्थ्य के महत्व को कम आँकने वाली अर्थव्यवस्था आज भी कायम हैं, हम उसके साथ एकजुट हो कर उसके लोगों की समस्याओं का हल ढूँढ़ रहे हैं। यद्यपि स्वास्थ्य तंत्र आदिवासी महिलाओं की सहभागिता को कम आँकता है, परन्तु हम उन्हें जाँच की रिपोर्ट उपलब्ध कराते हैं ताकि अपने बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी करने को इच्छुक माताओं के संकल्प को पूरा करने में उनकी सहायता कर सकें।

लिनिया आशा करती है कि वह अपने समुदाय के लोगों के लिए प्रदूषण से मुक्त भोजन का प्रबन्ध कर सके ताकि उसके लोग मरकरी के दुष्प्रभाव से बच सकें जो कि मृत्यु, बीमारी, और विकलांगता का कारण बन रहा है और राहत का और कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है। हम जानते हैं कि यह एक महत्वाकांक्षी योजना है, परन्तु एक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट के लिए यह संस्कृति और परिस्थितियों के अनुरूप और समुदाय पर ही निर्भर समाधान है। हम लिनिया के भागीदार बनने की आशा करते हैं।

जब लिनिया ने हमसे सहायता का निवेदन किया, तो हम तुरन्त ही एकजुटता दिखाते हुए उसके साथ खड़े हो सके। जब हमने डिसमेंटलिंग द डॉक्ट्रिन ऑफ डिस्कवरी कोयलिशन से सहायता का निवेदन किया, तो वे भी एकजुटता दिखाते हुए तुरन्त लिनिया और वयाना के लोगों के साथ खड़े हो सके। हमारे लिए, यह एकजुटता की प्रेरणादायक कहानी है।

सारा आगस्टिन तेवा जाति से हैं, और वे मेनोनाइट चर्च, वाशिंगटन, यूएसए की सदस्या हैं। वे डिस्प्यूट रिसॉल्यूशन सेन्टर ऑफ योकिमा एण्ड किट्टीटास काँटिस की कार्यपालन निदेशिका हैं। उन्होंने अन्य लोगों के साथ मिलकर सुरिनाम इंडिजिनियस हेल्थ फण्ड और डिसमेंटलिंग द डॉक्ट्रिन ऑफ डिस्कवरी नेशनल कोयलिशन की स्थापना किया।

